B.A (Prog.) IInd Sem.

DATE

PAGE NO

लघु टिप्पणी (शिवराजविजयम्)

मरीचिमालिनः — ब्रह्म मुहूर्त में पूर्व दिशा से उदित होते हुए लाल प्रकाश की आभा युक्त सूर्य भगवान को मरीचिमालिन कहा गया है।

षण्णामृतूनाम् — भगवान सूर्य ही छः ऋतुओं का वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त एवं शिशिर आदि का निर्माण करते हैं।

पुष्पावचयं — गौर सिंह नामक ब्रह्मचारी बटु (आश्रम का शिष्य) पुष्पवाटिका में जाकर अपने आचार्य द्वारा की जाने वाली संध्यावन्दना के लिए पुष्पों का चयन करने लगा।

कम्बुकण्ठः — गौर सिंह नामक ब्रह्मचारी (आश्रम के शिष्य) की शारीरिक सुन्दरता का वर्णन करते हुए बताया है कि उसकी ग्रीवा (गरदन) शंख के समान सुन्दर थी।

समानवयः — समान आयु वाला आश्रम के ब्रह्मचारी (शिष्य) गौर सिंह और श्याम सिंह दोनों ही सहपाठी तथा एक समान आयु वर्ग (समवयस्क) के थे।

आज्ञाचक्रम् — आज्ञा चक्र का स्थान मनुष्य की दोनों भौंहों के मध्य भाग में स्थित है। इसी स्थान पर सुषुम्णा नामक नाड़ी का अन्त होता है तथा मन, बुद्धि एवं अहंकार का निवास स्थान है।

Scanned with CamScanner

DATE
PAGE NO.

युगभेदा :- भगवान सूर्य ही है जो युगों का निर्माण करते हैं युग चार माने गए हैं - सत युग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, [redacted] तथा कलियुग।

उत्तरं दक्षिणं-चायनम - भगवान सूर्य ही है जो अयन का निर्माण करते हैं। अयन दो होते हैं - उत्तरायण एवं दक्षिणायण।
सूर्य जब - मकर राशि से मिथुन राशि में होतो उत्तरायण होता है।
सूर्य जब - कर्क राशि से धनु राशि में हो तो दक्षिणायन होता है।

पुण्डरीकपटल - प्रातः काल सूर्योदय के समय सूर्य के प्रकाश से जो श्वेत कमल के पुष्प खिल उठते हैं उन कमल के पुष्पों को पुण्डरीकपटल कहा गया है।

तृणशकलैः - लकड़ी के या घास आदि के बहुत छोटे टुकड़े, तिनके जिनकी सहायता से पेड़ के पत्तों को आपस में जोड़ने का कार्य किया जाता है। जिससे दोना या पत्तल आदि बनाते हैं।

षोडशवर्षदेशीय - यह शब्द आयु की गणना करने के के लिए संख्या के रूप में प्रयोग हुआ है। अर्थात आश्रम के ब्रह्मचारी (शिष्यों) गौर सिंह एवं श्याम सिंह की आयु लगभग 16 वर्ष की थी।

चक्रवर्ती - चक्रवर्ती अर्थात सम्राटों के सम्राट अथवा पूरे ब्रह्माण्ड के एक मात्र शासक। सूर्य भगवान को पूरे ब्रह्माण्ड का कर्ता माना गया है।

Scanned with CamScanner

दग्धमुख! — जले हुए मुखवाला अर्थात यह शब्द महमूद गजनवी के लिए प्रयुक्त हुआ है। जब वह हिन्दुओं पर अत्याचार कर रहा तब उन्होंने दुखी हो कर ~~गजनवी~~ ~~क~~ जले हुए मुख वाले गजनवी को दग्धमुख शब्द से सम्बोधित किया।

निर्मक्षिक — ऐसा एकान्त स्थान जहाँ पर मनुष्य तो क्या एक मक्खी भी न हो। अर्थात ऐसा स्थान जहाँ मक्खी के प्रवेश को भी रोक कर निर्मक्षिक (मक्खी रहित) कर दिया।

Scanned with CamScanner

B.A (Prog.) Ist year

DATE 21/04/2020
PAGE NO.

शुकनासोपदेश से लघु टिप्पणी

1 यौवराज्याभिषेक

युवा-अवस्था में किया जाने वाला अभिषेक अर्थात् प्राचीन काल में राजा वृद्ध हो जाने पर अपने सबसे बड़े पुत्र को युवराज पद पर आसीन कर देते थे जिससे उनका पुत्र शासन व्यवस्था को सम्भालना सीख ले। इस अवसर पर एक उत्सव का आयोजन होता था जिसमें वेद-मन्त्रों के उच्चारण के साथ पवित्र तीर्थों के जल से युवराज/राजकुमार का स्नान (अभिषेक) कराया जाता था

2 उपकरणसंभार

जब वृद्धावस्था में राजा अपने बड़े पुत्र को युवराज पद पर आसीन करता है उस समय एक उत्सव मनाया जाता है तथा युवराज का स्नान (अभिषेक) कराया जाता है। इस सम्पूर्ण कार्य को करने के लिए अनेक मांगलिक वस्तुएं जैसे - छत्र, चंवर, राजसिंहासन, पगड़ी, तीर्थों का पवित्र जल, पल्लव, यज्ञ-सामग्री, कुशा, स्वर्ण-कलश आदि अनेक उपकरणों की आवश्यकता होती है जिन्हें उपकरणसंभार कहा जाता है।

3 यौवनप्रभवम् -

युवा-अवस्था को ही उपदेश देने के लिए योग्य समय माना गया है, क्योंकि यही अवस्था है जिसमें यौवन के प्रभाव से युवा-आयु का व्यक्ति गहन अंधकार में प्रवेश करते हुए अपना सब कुछ नष्ट कर लेता है इसलिए इस अवस्था में यौवन के प्रभाव से बचाने के लिए ही शुक का उपदेश अत्यन्त उपयोगी है।

4 तिमिरान्ध/तिमिररोग

तिमिर रोग नेत्रों का एक अत्यन्त भयंकर रोग है जिसमें व्यक्ति को संध्या काल या सूर्यास्त के बाद कुछ दिखाई नहीं देता है उसी प्रकार लक्ष्मी या धन के प्रभाव से व्यक्ति को अहंकार रूपी नशा उत्पन्न हो जाता है। अतः उस व्यक्ति को भी अहंकार के कारण कुछ भी दिखाई नहीं देता, उसकी तुलना तिमिररोग (रतौंधी) से की है।

Scanned with CamScanner

DATE 22/04/2020
PAGE NO

6 दर्पदाहज्वरोष्मा
लक्ष्मी के मद (नशा या घमण्ड) से व्यक्ति में अहंकार रूपी दाह ज्वर (जलाने वाला ज्वर या बुखार) का ताप अथवा गर्मी इतनी भयंकर होती है कि जिसे किसी भी प्रकार के शीतोपचार (शीतल जल की पट्टी) से भी शान्त या दूर नहीं किया जा सकता।

7. अपरिणामोपशमः
लक्ष्मी से उत्पन्न अभिमान अत्यन्त भयावह होता है क्योंकि यौवन के प्रभाव से उत्पन्न अभिमान तो युवावस्था के साथ अर्थात् वृद्धावस्था आने पर समाप्त हो जाता है किन्तु लक्ष्मी के मद से उत्पन्न अभिमान निरन्तर बढ़ता रहता है जो वृद्धावस्था आने पर भी समाप्त नहीं होता अपितु अभिमान और भयंकर रूप में उत्पन्न होने लगता।

8 मृगतृष्णा
मनुष्य की इन्द्रियों को निरन्तर आकृष्ट करने वाली उपभोग रूपी मृगतृष्णा (लालच) बहुत बुरे परिणाम वाली होती है। जैसे कि एक प्यासे व्यक्ति को मरुस्थल की गर्मी में दोपहर को सूर्य की तीव्र किरणों से रेत ऐसा प्रतीत होता है जैसे जल हो। उसी जल के भ्रम (लालच) वश वह व्यक्ति जल की तलाश में हिरणों के समान बहुत दूर तक जाता ~~फिर~~ है फिर भी उसे जल नहीं मिलता अपितु प्यास के कारण थक ही जाता है। ~~यह सब रेत को जल समझने के~~ यह सब मृगतृष्णा वश रेत में जल का आभास होने के कारण होता है।

9 स्फटिकमणि
गुरु के उपदेश का सही पात्र कौन है इस विषय में बताते हुए कहा गया है कि आप जैसे निर्मल अन्तःकरण वाले ही गुरु के उपदेश के योग्य पात्र होते हैं, क्योंकि आप जैसे व्यक्ति के निर्मल अन्तःकरण में ही गुरु का उपदेश सरलता से उसी प्रकार प्रवेश कर जाता है जैसे स्वच्छ स्फटिकमणि में चन्द्रमा की किरणें आसानी से प्रवेश कर जाती हैं।

Scanned with CamScanner

10 शङ्खाभरण

शङ्खाभरण एक प्रकार का आभूषण होता है जिसे हाथी के मस्तक पर पहनाया जाता है, जिससे हाथी के मुख की शोभा को बढ़ाया जाता है तथा हाथियों के दृष्टिदोष को दूर करने के लिए भी इस प्रयोग किया जाता है। उसी तरह गुरु का उपदेश भी व्यक्ति के लिए आभूषण के समान है जो उसके मुख की शोभा को बढ़ाते हुए समस्त दोषों का समाप्त कर देता है।

11 वाडवानल

वाडवानल समुद्र के भीतर लगने वाली अग्नि है जिसे समुद्राग्नि भी कहा जाता है। इस भयंकर अग्नि को बुझाने में जल भी असमर्थ है क्योंकि ये अग्नि जल के द्वारा बुझाने पर और अधिक प्रबल हो जाती है।

12 क्षीरसागरात् / क्षीरसागर से - दूध से बने समुद्र को क्षीरसागर कहा जाता है। कथा के अनुसार जब क्षीरसागर (समुद्र) का मंथन हुआ था तब समुद्र/क्षीरसागर से 14 रत्न उत्पन्न हुए थे लक्ष्मी भी इन 14 रत्नों में से एक है। इसलिए कहा जाता है कि लक्ष्मी क्षीरसागर से निकलते समय अपने साथ अन्य रत्नों से एक गुण लेकर आई है। अतः इसी कारण से लक्ष्मी के स्वभाव में एकरूपता न होकर विभिन्नता दिखाई देती है।

13 कौस्तुभमणि

समुद्र मंथन के समय क्षीरसागर से 14 रत्न प्राप्त हुए थे जिसमें कौस्तुभमणि भी एक रत्न था। कौस्तुभमणि बहुत कठोर होती है, इसी कौस्तुभमणि से लक्ष्मी ने क्षीरसागर से निकलते समय कठोरता वाला गुण प्राप्त किया है। इसीलिए लक्ष्मी के स्वभाव में कठोरता होती है उसे किसी के दुःख - दर्द से कोई मतलब नहीं, और ना ही वह किसी के लिए अपने आप को नर्म करती।

DATE
PAGE NO

14 गन्धर्वनगरलेखा

कहा जाता है कि आकाश में गन्धर्वनगर नामक कोई नगर है जो मात्र व्यक्ति का दृष्टि भ्रम कहा जा सकता है क्योंकि यह देखते देखते ही अचानक से अदृश्य हो जाता है या आकृति बदल लेता है। इस गन्धर्वनगर को ज्योतिशास्त्र में अमङ्गल का सूचना माना गया है। लक्ष्मी भी स्वभाव से गन्धर्वनगर के समान ही निरन्तर अपना स्वरूप बदलती रहती है तथा कभी भी अदृश्य हो जाती है। तात्पर्य है कि लक्ष्मी आज किसी के पास है तो कल किसी दूसरे के पास चली जाती है।

15 गन्धगज

हाथी के विषय में कहा जाता है कि हाथी के कान नीचे अथवा गण्डस्थल से एक रस टपकता है जिससे हाथी मदमस्त या उन्मत्त हो जाता है। उसी प्रकार लक्ष्मी भी राजाओं अथवा धनवान व्यक्ति के हाथियों के गण्डस्थल से टपकने वाले मदजल का पानकर के मदमस्त एवं उन्मत्त हो जाती है तथा कितना भी सम्भालो फिर भी नही सम्भाली जाती और लड़खड़ाती हुई कहीं भी चली जाती है।

16 नारायणमूर्ति

संसार में भगवान विष्णु के अनेक रूप प्रचलित है उसी प्रकार यह दुष्टा लक्ष्मी अनेक रूपों में दिखाई देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि लक्ष्मी ने अपने इन विभिन्न प्रकार के रूपों को धारण करने के लिए नारायण (विष्णु) भगवान के शरीर का आश्रय लिया है।

17 **वसुजननी**

पवित्र गंगा को आठ वसुओं की जननी होने के कारण वसुजननी कहा गया है। उसी प्रकार लक्ष्मी भी धन देने वाली है इसलिए धन की जननी है। वसुओं की माता होते हुए भी गंगा के स्वभाव में लहरों एवं बुलबुलों के रूप में चंचलता दिखाई देती है उसी प्रकार लक्ष्मी का स्वभाव भी अत्यन्त चञ्चल है यह किसी के भी पास स्थिर नहीं रहती। (आठ वसुओं के नाम - धव, ध्रुव, सोम, भद्र, अनल, अनिल, प्रत्यूष, प्रभास)